नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

विकास की रफ्तार में देरी का महंगा मूल्य

भारत आज दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है. देश वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है. इसके लिए सड़क, रेल, ऊर्जा, पाइपलाइन, बंदरगाह और औद्योगिक परियोजनाओं का समय पर पूरा होना अत्यंत आवश्यक है. लेकिन विडंबना यह है कि जिन परियोजनाओं को विकास का इंजन बनना चाहिए, वही देरी और लागत वृद्धि के कारण राष्ट्रीय संसाधनों पर भारी बोझ बनती जा रही हैं.

केंद्र सरकार के आंकड़ों के अनुसार देशभर में 981 बड़ी परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं. इनमें से बड़ी संख्या ऐसी है जो निर्धारित समय सीमा से पीछे चल रही हैं. इसका परिणाम यह हुआ है कि इन परियोजनाओं की कुल लागत लगभग 6.65 लाख करोड़ रुपए तक बढ़ चुकी है. यदि परियोजनाएं तय समय पर पूरी हो जातीं तो देश के खजाने में लगभग 5.65 लाख करोड़ रुपए की बचत हो सकती थी. यह राशि इतनी बड़ी है कि इससे कई नए राजमार्ग, अस्पताल, विश्वविद्यालय और सिंचाई परियोजनाएं शुरू की जा सकती थीं.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी हाल ही में परियोजनाओं की समीक्षा बैठक में इस चिंता को सार्वजनिक रूप से व्यक्त कर चुके हैं. उनका कहना था कि परियोजनाओं में देरी केवल लागत नहीं बढ़ाती, बल्कि आम नागरिकों को मिलने वाली सुविधाओं और विकास के लाभ को भी वर्षों तक टाल देती है. वास्तव में किसी रेल लाइन, सड़क या रिफाइनरी के देर से बनने का अर्थ केवल आर्थिक नुकसान नहीं होता, बल्कि रोजगार, निवेश और क्षेत्रीय विकास के अवसरों का भी नुकसान होता है.

देश में परियोजनाओं के अटकने के पीछे कई कारण हैं. भूमि अधिग्रहण की जटिल प्रक्रिया, पर्यावरण और प्रशासनिक मंजूरियों में विलंब, ठेकेदारों की वित्तीय समस्याएं, बढ़ती महंगाई तथा प्रारंभिक योजना निर्माण में खामियां प्रमुख कारण हैं. कई बार परियोजनाओं की घोषणा तो कर दी जाती है, लेकिन उनकी व्यवहार्यता, वित्तीय व्यवस्था और भूमि उपलब्धता पर पर्याप्त तैयारी नहीं की जाती. परिणामस्वरूप काम शुरू होने के बाद बाधाएं सामने आती हैं और लागत लगातार बढ़ती जाती है.

राजस्थान रिफाइनरी इसका बड़ा उदाहरण है. वर्ष 2022 तक पूरी होने वाली यह परियोजना अब 2026 तक खिसक गई है और इसकी लागत में भारी वृद्धि हो चुकी है. इसी प्रकार मुंबई-नागपुर-झारसुगुड़ा पाइपलाइन, कटनी-सिंगरौली डबल रेल लाइन तथा मध्यप्रदेश की रतलाम-महू-खंडवा-अकोला गेज परिवर्तन परियोजना वर्षों से विलंब का सामना कर रही हैं. जिन परियोजनाओं को पांच वर्ष में पूरा होना था, वे डेढ़-दो दशक बाद भी अधूरी हैं.

मध्यप्रदेश की स्थिति भी चिंता बढ़ाने वाली है. यहां चल रही अनेक केंद्रीय परियोजनाओं में से बड़ी संख्या समय से पीछे है और कई का बजट भी मूल अनुमान से काफी अधिक हो चुका है. इसका सीधा असर प्रदेश के औद्योगिक विकास, परिवहन सुविधाओं और निवेश संभावनाओं पर पड़ता है.

विकसित भारत का सपना केवल नई योजनाओं की घोषणा से पूरा नहीं होगा. उतना ही महत्वपूर्ण है कि स्वीकृत परियोजनाएं समयबद्ध ढंग से पूरी हों. इसके लिए जवाबदेही तय करनी होगी, मंजूरी प्रक्रियाओं को सरल बनाना होगा और परियोजना प्रबंधन को आधुनिक तकनीक से जोड़ना होगा. विकास की असली रफ्तार तभी दिखाई देगी, जब परियोजनाएं समय पर पूरी हों और जनता को उनका लाभ बिना अनावश्यक प्रतीक्षा के मिल सके. देरी की कीमत अंततः देश के हर करदाता को चुकानी पड़ती है, इसलिए अब समयबद्ध क्रियान्वयन को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना होगा.

मोदी कार्यकाल के बारह वर्ष

12 वर्षों में भारत को मिली नई पहचान

लक्ष्मी पुरी

> मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने भारत की अग्रणी शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया और उसे व्यवहार में भी उतारा है. सैन्य और आर्थिक शक्ति, परमाणु और अंतरिक्ष क्षमताएँ, वैश्विक व्यवस्थाओं में निर्णायक भूमिका तथा अंतरराष्ट्रीय व्यवस्थाओं में नियमों, मानकों और नीतियों को प्रभावित करने की क्षमता, उद्देश्यपूर्ण ढंग से निर्मित और सफलतापूर्वक विकसित किया गया कूटनीतिक, अनुसंधान एवं विकास और तकनीकी संसाधनों का मजबूत आधार, साथ ही भारत की सॉफ्ट पावर को पहले से कहीं अधिक प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया गया है. यद्यपि वैश्विक स्तर पर वह संवाद के माध्यम से शांति और सुरक्षा के पक्षधर है, लेकिन आतंकवाद के मुद्दे पर उरी से लेकर 'ऑपरेशन सिंदूर' तक उनकी 'कतई बर्दाश्त न करने की नीति' है.

पिछले सप्ताह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत के इतिहास में सबसे लंबे समय तक लगातार पद पर रहने वाले निर्वाचित प्रधानमंत्री बन गए. यह उपलब्धि उनकी भी है और भारत की भी. उनसे पहले किसी ने भी इस लोकतंत्र में लगातार इतने लंबे समय तक शासन नहीं किया और न ही इतनी प्रतिस्पर्धी राजनीति के बीच किसी ने लगातार तीन बार चुनावी जीत हासिल की है. हालाँकि, रिकॉर्ड से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने क्या कार्य किया है. अपने कार्यकाल के प्रत्येक मिनट के पूरे साठ सेकेंड का भारत के लिए पूरी ऊर्जा के साथ उपयोग करते हुए उसे सार्थक बनाया, उनके इन बारह वर्षों का प्रत्येक वर्ष 365 दिनों की उपलब्धियों से चिह्नित रहा, और इसी दौरान उस नए, गतिशील भारत का निर्माण हुआ, जिसे आज दुनिया एक अलग नजरिए से देख और समझ रही है.

मैंने अपनी कामकाजी ज़िंदगी फील्ड में, राजधानियों में, बोर्ड और कॉन्फ्रेंस रूम में तथा संयुक्त राष्ट्र में बितायी है जहाँ देशों के बारे में दुनिया अपनी राय कायम करती है. बीते एक दशक जो परिवर्तन आया है, वह मेरे द्वारा देखे गए परिवर्तनों में सबसे अधिक उल्लेखनीय है. भारत के प्रति पहले जो उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण हुआ करता था, उसकी जगह अब प्रतिस्पर्धी रुचि, सीखने की इच्छा ने ले ली है, दुनिया भारत के उस परिवर्तन को विस्मय से देख रही है, जिसमें वह एक 'सिद्धांतों के आधार पर आपत्ति दर्ज करने वाले' और 'व्यवस्था को स्वीकार करने वाले' देश की जगह अब 'व्यवस्था को आकार देने वाले' देश के रूप में उभरा है, आज भारत बहुआयामी कूटनीतिक सहभागिता और रणनीतिक दृढ़ता के साथ आगे बढ़ रहा है. वह न केवल अपने प्रभाव का उपयोग अपने विचारों के समर्थन में कर रहा है, बल्कि अपने विचारों के समर्थन को भी शक्ति में परिवर्तित कर रहा है.

दुनिया इस शख्सियत का सही आकलन करती है. उन्हें सत्ता विरासत में नहीं मिली; उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के सर्वोच्च पद तक का सफर बिना किसी पारिवारिक नाम के सहारे, रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर बीते बचपन से तय किया; उन्होंने भारत के कोने-कोने की यात्रा की, लोगों को समझा, उनके साथ बैठकर भोजन किया, उनके सुख-दु:ख में भागीदार बने और जमीनी स्तर से अपना राजनीतिक जीवन निर्मित किया. वंशानुगत सत्ता और विशेषाधिकार प्राप्त उत्तराधिकार से ऊब चुकी दुनिया में, ऐसे नेता की छवि अधिक भरोसेमंद होती है, जिन्होंने अपनी पहचान स्वयं गढ़ी हो. वह भारत के पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने देश की सभ्यतागत पहचान को अपनी पहचान के रूप में धारण किया है, न कि उसके प्रति क्षमायाचना का भाव रखा है अथवा विदेशी वेशभूषा और दृष्टिकोण अपनाकर स्वयं को किसी अन्य रूप में प्रस्तुत किया है. वैश्विक जनमत का आकलन करने वाले सर्वेक्षण इस बात से सहमत हैं. वर्षों से मोदी लोकतांत्रिक नेताओं की मॉर्निंग कंसल्ट रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर बने हुए हैं, उनकी स्वीकृति दो-तिहाई से अधिक रही है, जो पश्चिमी नेताओं से काफी आगे है. प्यू के सर्वेक्षणों के अनुसार, दस में से आठ भारतीय उनके प्रति अनुकूल दृष्टिकोण रखते हैं और वे अपने देश की दिशा से अधिकांश परिपक्व लोकतंत्रों की तुलना में अधिक संतुष्ट हैं. सरकारें इस बात से सहमत हैं उन्होंने 19 विदेशी संसदों को संबोधित किया है और लगभग 30 देशों के राजकीय सम्मान प्राप्त किए हैं, जिनमें से कई उन देशों के सर्वोच्च नागरिक सम्मान हैं. अपने लोगों से वह सीधे संवाद करते हैं, हर महीने 'मन की बात' के माध्यम से अपने मन और हृदय की बात खुलकर रखते हैं; जबकि अन्य देशों के नेताओं के साथ उनका व्यवहार ऐसा है, जिसने वाशिंगटन और मॉस्को, खाड़ी देशों और यूरोप सबको एक साथ किसी अद्भुत 'जादुई प्रभाव' के साथ जोड़कर रखा है.

भारत अब मॉडल आयात करने के बजाय उन्हें निर्यात कर रहा है. उसकी डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना दुनिया के लगभग आधे रियल-टाइम भुगतान को संचालित करती है और लाखों खातों तक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाती है. आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, एक दशक में 25 करोड़ लोग गरीबी के चंगुल से बाहर आए हैं: 'अंत्योदय', जो राज्य के संचालन का आधारभूत सिद्धांत है, केवल एक नारा भर नहीं, बल्कि ऐसा सिद्धांत है, जो सुनिश्चित करता है कि कोई भी पीछे न छूटे और सबसे पीछे खड़े व्यक्ति तक पहले सहायता पहुँचे.

(लेखिका संयुक्त राष्ट्र की पूर्व सहायक महासचिव और यूएन विमेन की पूर्व उप कार्यकारी निदेशक हैं)

विंध्य की डायरी

महापौर-अध्यक्ष किनारे पार्षद हुए लामबंद !

डॉ. रवि तिवारी

रीवा नगर निगम में सब कुछ ठीक-ठाक नहीं चल रहा है. यहां महापौर और अध्यक्ष दोनों अलग-अलग दल से हैं और इस समय दोनों से कांग्रेस और भाजपा के पार्षद नाखुश चल रहे हैं. कांग्रेस और भाजपा के पार्षदों का एक साथ आना नई सियासी चर्चाओं को गर्म कर दिया है. कांग्रेस पार्षद महापौर अजय मिश्रा के नेतृत्व में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं तो वहीं भाजपा की ओर से निगम स्पीकर व्यंकटेश पाण्डेय को नेता माना जा रहा है. दोनों दलों के पार्षद ने जन समस्याओं को लेकर अपने उक्त नेताओं के सामने बात रखी पर समाधान शून्य रहा. लिहाजा संयुक्त मोर्चा का गठन किया, जिसमें वह पार्षद शामिल हैं जिन्होंने कुछ समय पहले अलग-अलग बैठकों में न पहुंचकर स्पीकर और महापौर के प्रति नाराजगी जाहिर की थी. अब दोनों दलों के पार्षद बगावत की तैयारी में हैं.

दरअसल शहर में पेयजल और सीवरेज की वजह से पार्षदों की सूचनाओं पर निगम प्रशासन की उदासीनता के लिये आखिरकार सब्र टूट गया. परिणाम स्वरूप महापौर एवं स्पीकर को किनारे कर दोनो दलों के पार्षद आयुक्त से मिलने पहुंचे और जनता की समस्या को रखते हुए अल्टीमेटम भी दिया. आयुक्त के आश्वासन पर पार्षद फिलहाल शांत हो गये हैं लेकिन काम नहीं होगा तो चेतावनी के मुताबिक आंदोलन की राह पर चले जाएंगे. साल भर से कम का कार्यकाल बचा है, ऐसे में महापौर एवं स्पीकर के प्रति नाराजगी का गुबार फूटने लगा है.

ट्रांसफर सूची ने निराश किया

इस समय ट्रांसफर का मौसम चल रहा है हर किसी ने अपने-अपने हिसाब से गुणा-गणित कर मनचाहे स्थान पर पदस्थापना के लिये परिश्रम किया. हर संभव प्रयास के साथ अपने शहर से मुख्यालय तक की दौड़ लगाई, नेता, मंत्री से भी गुहार लगाई. इतना ही नहीं जो सिस्टम है ट्रांसफर का उसे भी फालो किया पर क्या पता था कि जब सूची आएगी तो नाम ही गायब रहेगा. विभिन्न विभागों की सूचियां देर रात बाहर आईं लेकिन जब अधिकारियों-कर्मचारियों का नाम सूची में नहीं दिखा तो निराशा हाथ लगी. जिनके हाथों में अपने ट्रांसफर की जिम्मेदारी सौंप कर आए थे उन्हें फोन मिलाते रहे पर एक ही जवाब था साहब की भी नही चली, सूची ऊपर से बनकर आई है. कई अधिकारी विंध्य से बाहर गए तो कुछ आए भी. जिनको कभी भरोसा नहीं था उनका भी स्थानान्तरण बाहर हो गया. यह बात और है कि राजनीति का शिकार कई अधिकारी हुए हैं.

विधायक बोलीं मोर बप्पा रे........

प्रशासन में बैठे जिम्मेदार अफसर अपनी जिम्मेदारियों से भाग रहे हैं. जरूरतमंद और दिव्यांग की समस्याओं का समाधान नहीं हो रहा है. सीधी जिले में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सेमरिया में विश्व सिकल सेल दिवस के शिविर में एक भावुक दृश्य सामने आया, जिसने सभी को हैरान कर दिया. जब एक दिव्यांग आदिवासी महिला सीधी विधायक रीती पाठक के दोनो पैरो को पकड़ कर अपनी पीड़ा सुनाने लगी. लम्बे समय से ट्राई साइकिल के लिये भटक रही दिव्यांग ने अपनी व्यथा जब सुनाई तो विधायक आश्चर्यचकित रह गई और सिर पर हाथ रखकर कहा मोर बप्पा रे.......अभी तक ट्राई साइकिल नहीं मिली, फिर पैर छोड़ने के लिये कहा. यह तस्वीर बता रही थी कि प्रशासन में बैठे अधिकारी दिव्यांगों तक की नहीं सुनते. जरूरतमंद कार्यालयों का चक्कर काटते रहते हैं पर कोई सुनवाई नहीं होती. ऐसे अफसरों के चलते ही सरकार की जनता के बीच किरकिरी हो रही है. अफसरों की संवेदनशीलता शायद खत्म होती जा रही है. रसूखदार के लिये नियम भी ताक में रख दिये जाते हैं लेकिन एक मजबूर और दिव्यांग आदिवासी महिला पर तरस भी नहीं खाते हैं.

शिक्षा क्षेत्र में इतना पिछड़ापन क्यों?

विश्व के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में एक भी भारत का नहीं है. पाठ्यक्रम में सुधार नहीं होने से स्नातकों को रोजगार नहीं मिल पाता. उद्योगों की जरूरत के मुताबिक कोर्स विकसित नहीं किए जाते.

जब विश्व के अधिकांश देशों में भारी अशिक्षा व्याप्त थी तब भारत के नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय अपनी श्रेष्ठता के लिए जाने जाते थे. वर्तमान समय में क्यू एस विश्व रैंकिंग के अनुसार हमारा आईआईटी 118 वें स्थान पर है ज बकि सिंगापुर के 2 विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग व टेक्नोलाजी के क्षेत्र में विश्व की 10 यूनिवर्सिटी में शामिल हैं. यूनिवर्सिटी आफ हांगकांग 11 वें तथा पेकिंग यूनिवर्सिटी 13 वें स्थान पर है. चीन की उच्च शिक्षा व्यवस्था अमेरिका से भी आगे बढ़ गई है. वह भारत की तुलना में 21 गुना बेहतर बताई जाती है. शिक्षा के मामले में चीन का वैश्विक शेयर 2000 में सिर्फ 5 प्रतिशत था जो 2025 में बढ़कर 36 प्रतिशत हो गया है. चीन में अनुसंधान पर विशेष जोर दिया जाता है. वहां उच्च शिक्षा से जुड़ा प्रशासन भी चुस्त-दुरुस्त है. हमारे विश्वविद्यालयों में न तो परीक्षा समय पर होती है, न समय पर नतीजे निकलते हैं. विभागों में पूर्णकालिक फैकल्टी नियुक्त न करते हुए अंशकालिक प्राध्यापकों से काम चलाया जाता है. परीक्षा प्रणाली से लेकर मार्कशीट तक में धांधली होती है. प्रश्नपत्र में पाठ्यक्रम के बाहर के सवाल पूछे जाते हैं. डिग्रियां देने में लंबा समय लगाया जाता है. रिसर्च के विषय आमतौर पर घिसे-पिटे रहते हैं. मौलिक अनुसंधान को बढ़ावा नहीं दिया जाता. विश्व के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में एक भी भारत का नहीं है. पाठ्यक्रम में सुधार नहीं होने से स्नातकों को रोजगार नहीं मिल पाता. उद्योगों की जरूरत के मुताबिक कोर्स विकसित नहीं किए जाते. थ्योरी पर अधिक ध्यान दिया जाता है, प्रैक्टिकल पर कम. भारत के प्रतिभाशाली युवा उच्च शिक्षा, अनुसंधान व नौकरी के उद्देश्य से विदेश चले जाते हैं. इस ब्रेन ड्रेन को अब तक रोका नहीं जा सका है. शिक्षा क्षेत्र में निवेश बढ़ाए जाने की जरूरत है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

धनवान होने की उम्मीद जगाओ, गमले में मनीप्लांट लगाओ

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हम धनवान बनना चाहते हैं. क्या इसके लिए बचत करें? लोग कहते हैं कि मनी सेव्ड इज मनी गेन्ड ! बचाया हुआ पैसा कमाई के समान होता है.'

हमने कहा, 'ज्यादा बचत करेंगे तो आप कंजूस कहलाएंगे. पैसा हाथ का मैल होता है. उसे खर्च करते जाइए. जब आप खर्च बढ़ाएंगे तो ज्यादा कमाने की इच्छा पैदा होगी. अपनी लाइफ स्टाइल को बेहतर बनाइए.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, धोखाधड़ीवाली पाँजी स्कीम में पैसा लगाने से रकम डूब जाती है. म्युचुअल फंड में भी रिस्क है. बिजनेस करने पर प्रॉफिट होगा या लॉस, पता नहीं! हमें धनवान बनने का सुरक्षित तरीका बताइए.'

हमने कहा, 'आप अपना नाम धनराज रख लीजिए और किसी पड़ोसी के घर से मनीप्लांट की टहनी चुपचाप चुराकर ले आइए और अपने घर के गमले में लगाइए. इधर मनी प्लांट बढ़ेगा और उधर आपके पास मनी आने लगेगा.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, एक पौधा हमारी

किस्मत कैसे बदलेगा. मनीप्लांट की बेल लगाने से कोई कैसे मालदार बनेगा?'

हमने कहा, 'महान वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बोस ने अनुसंधान किया था कि पौधों में भी जान होती है और वह भी सुख-दुख अनुभव करते हैं. लोग पीपल, वटवृक्ष और तुलसी की पूजा करते है. आंवले के वृक्ष का भी पूजन किया जाता है. मान्यता है कि इनका आशीर्वाद फल प्रदान करता है. आप मनी प्लांट लगाकर उससे समय-समय पर बातचीत कीजिए और कहिए कि मैं तुझे पानी दूंगा, तू मुझे दौलत दे!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ऐसी बातों में हमारा विश्वास नहीं है. कोई अच्छा सा विकल्प बताइए जिससे अचानक मोटी रकम हाथ में आ जाए.' हमने कहा, 'इसके लिए यही उपाय है कि आप राजनीति में चले जाइए. वहां भ्रष्टाचार का बोलबाला है. किसी पद पर पहुंच गए तो कमाई का जरिया शुरू हो जाएगा. यह भी संभव है कि आपको दलबदल करने का ऑफर आए तो मुफ्त में करोड़ों की दौलत मिल सकती हैं. जनता गरीब हो सकती है, लेकिन नेता हमेशा संपन्न रहता है. उसकी पांचों उंगलियां घी में रहती हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12295

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4		■	5	6
7				■	8		
	■	9		10		■	
11	12		■	13		14	
15		■	16		■		■
■	17				■	18	19
20		■		■	21		
22			■	23			

बाएं से दाएं

1. हलफनामा, एफीडेविट 5. नासिका 7. रथ का नायक, रथी (सं.) 8. पैदल चलकर जाने वाला 9. बचकर निकल जाना, कटवाना 11. गप मारना 13. लोकाचार, देश या समाज की प्रचलित रीति 15. गीला, शीतल 16. श्रद्धा, आलंबन (सं.) 17. पान बेचने वाली स्त्री 18. हृदय, चित्त, जी 20. केवल, भर, सिर्फ 21. प्रश्न, मांग 22. झिड़की, फटकार 23. सऊदी अरब का एक प्रमुख शहर

ऊपर से नीचे

1. शरण में आया हुआ 2. रास्ता, मार्ग, राह 3. शरीर पर धीरे-धीरे हाथ से ठोंकना 4. अधम, आचार नीति या धर्म से नीचे गिरा हुआ 5. शब्द, संगीत, अव्यक्त शब्द 6. कल या मशीन से ढाला गया सिक्का 8. हथियार आदि की धार को रगड़कर पैनी करना 10. भारत का एक राज्य जहां कभी राजपूताना हुआ करता था 12. पराधीनता, परवशता (सं.) 14. प्राचीर, परकोटा 16. विद्वान (उर्दू) 19. प्यारा बालक, लड़का, पति, साल का पेड़ 20. सामग्री, सामान, माला, हार, संपत्ति, कोई उत्तम वस्तु 21. समेत, सहित, सहायक

Solution 12294

च	ला	य	मा	न	■	भा	वी
टा	ट	■	त	र	ब	त	र
व	■	स	ह	म	त	■	ता
न	सी	ह	त	■	■	धा	■
■	धा	न	■	म	ख	म	ल
प्रा	■	शी	त	ल	ता	■	त्ती
ची	त	ल	■	म	ना	ना	■
र	ट	■	म	ल	■	ती	क्ष्ण

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में विशेष परिश्रम करना होगा, वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग रहेगा, आर्थिक लाभ होगा, व्यर्थ वाद विवाद रहेगा, मित्र के कारण कार्यो में बाधाओं का सामना करना पडेगा, वर्ष के मध्य में मतभेद रहेगा, पारिवारिक परेशानी में वृद्धि होगी, मान सम्मान के प्रति सतर्क रहें, स्वजनों से मतभेद होगा, शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, वर्ष के अन्त में शासन सत्ता का लाभ होगा, व्यक्ति विशेष का सहयोग मिलेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पद का लाभ मिलेगा, सामाजिक कार्यो में सफलता मिलेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु वर्ग से कष्ट होगा, चिन्ता रहेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थिति में सुधार होगा, शिक्षा में सफलता मिलेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में रूचि रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा, मानसिक चिन्ता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला लंबे कद का एकांतप्रिय लेखन और अध्ययन के क्षेत्र में रूचि रखेगा. नौकरी में उच्च पद पर पदस्थ होगा. माता का विशेष प्रेमी होगी. जन्म स्थान के निकट ही अपना भाग्योदय करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

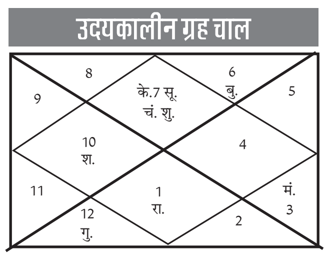

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमीं चन्द्रवासरे रात 7/23, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे दिन 2/42, व्यतिपात योगे दिन 3/11, विष्टि करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार कन्या, शु.रा. 6, 8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमीं को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड़, नमक, चांवल, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. धनियां, जीरा, आदि के भाव में समता रहेगी. सोना चांदी में तेजी का रूख रहेगा. लोहा, के भाव में मंदी होगी. भाग्यांक 9455 है.

मेष- आप कार्य के बोझ को कम करने की कोशिश करेंगे. कर्ज से छुटकारा पायेंगे. आवेश में आकर कोई भी ऐसा कार्य न करें, जो आपके हित में न हो.

वृषभ- अध्ययन व लेखन से लोगों को बड़ी सफ्लता मिल सकती है. भाग्योन्नति के प्रयासों में सफ्लता प्राप्त होगी. सामाजिक कार्य पूजा पाठ में मन लगेगा.

मिथुन- आप लोगों के साथ संबंध बढ़ाने का प्रयास करेगे. कार्यक्षेत्र में बर्चस्व बढ़ेगा. शत्रु पर विजय प्राप्त होगी. व्यवसाय में उन्नति होगी. मांगलिक कार्यो में खर्च होगा.

कर्क- अपने गलत व भ्रामक विचारों को छोड़े, सफ्लता मिलेगी. शीघ्रता में कोई भी फैसला न लें. वाहन संबंधी बिक्री के कार्यो में उलझन हो सकती है.

सिंह- जोखिम के कार्यो से दूर रहें. आपकी परेशानी बढ़ सकती है. परिश्रम तथा दौड़धूप की अधिकता रहेगी. अनपेक्षित आगन्तुकों के आने से खर्च में वृद्धि होगी.

कन्या- व्यर्थ विवादों में उलझने की बजाय कार्यो पर ध्यान दें. साझेदारी का लाभ होगा. धार्मिक कार्यो में मदद प्राप्त होगी. कामकाज बनने का योग है.

तुला- युवा उच्च अध्ययन अथवा प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता प्राप्त करेंगे. आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

वृश्चिक- बुजुर्गो के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता हो सकती है. फैसला लेने में स्वयं को अक्षम पायेंगे. दूर दराज की यात्रा का योग है. वृषभन्तुकों के आने से प्रसन्नता रहेगी.

धनु- निजी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करें, सफ्लता मिलेगी. भूमि मकानादि कार्य में व्यस्त रहेगे. सम्मान मिलेगा. मांगलिक कार्यो में समय देना होगा.

मकर- उलझी बात सुलझाने से आप राहत महसूस करेंगे. कार्यक्षेत्र की योजनायें अटकेंगी अध्ययन अध्यापन में मन लगेगा. सुख साहस पराक्रम बढ़ेगा.

कुम्भ- स्वास्थ्य में चल रहा उतार परेशान कर सकता है. दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा. व्यापार व्यवसाय की प्रगति होगी. धार्मिक कार्यो में लगन रहेगी.

मीन- प्रियजनों के साथ समय बिताकर खुशी होगी. भाग्योदय के अवसर से उत्साह बना रहेगा. विरोधियों से कड़े मुकाबले की संभावना है. वास्ते सतर्कता बांछनीय.

SUDOKU 7427

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7426

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1